eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धि–लब्धि एवम उनके समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन

[1]कृष्ण कुमार जायसवाल
[1]बी.एड. विभाग, बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर उ0प्र0

Received: 15 June 2018, Accepted: 15 July 2018, Published on line: 15 Sep 2018

Abstract

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं और अनेक प्रकार की समायोजन समस्याओं का सामना करते हैं। इन किशोर विद्यार्थियों को स्वयं से और परिस्थितियों से समायोजित करने में उनकी बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। परन्तु क्या प्रत्येक बौद्धिक स्तर के किशोरों के समायोजन में उनकी बुद्धि महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है?– इसका अध्ययन करने के लिए कुशीनगर के अनुदानित विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों पर यह शोध किया गया। समायोजन विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और टी परीक्षण का प्रयोग किया गया। इसमें पाया गया कि जिन विद्यार्थियों में उच्च बुद्धि लब्धि थी, उनका समायोजन स्तर उत्तम था। जबकि निम्न बुद्धि लब्धि वाले विद्यार्थियों में बुद्धि का समायोजन से संबंध प्राप्त नहीं हुआ। अर्थात उच्च बुद्धि लब्धि विद्यार्थियों के समायोजन में मददगार होती है, जबकि निम्न बुद्धि लब्धि का समायोजन से सार्थक संबंध नहीं मिलता है। यह शोध अभिवावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों आदि के लिए महत्त्वपूर्ण है। अभिवावकों और शिक्षको द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर को समझते हुए उच्च और निम्न बुद्धि लब्धि वाले विद्यार्थियों को उनकी क्षमता के अनुरूप समायोजन में सहायता की जानी चाहिए। संवेदनशील विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

शब्द संक्षेप– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, बुद्धि–लब्धि, समायोजन एवं संबंध का अध्ययन।

Introduction

मानव का संपूर्ण जीवन समायोजनों की शृंखला है। समायोजन परिवेश से,समायोजन अन्य से और समायोजन स्वयं से। इसलिए समायोजन का अध्ययन शिक्षा में महत्वपूर्ण रहा है, विशेषकर माध्यमिक शिक्षा में। इस अवस्था में विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं। ऐसा माना जाता है कि किशोरावस्था संवेगात्मक संघर्ष, तनाव तथा तूफान की अवस्था है।माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम या व्यवसाय क्षेत्र के चयन और उसमें समायोजन की समस्या तो प्रमुख होती ही है, साथ ही इस स्तर के विद्यार्थियों को कई स्तरों पर समायोजन समस्याओं का सामना करना पड़ता है।जैसे– शारीरिक परिवर्तनों से समायोजन, विषमलिंगी आकर्षण से समायोजन ,परिवार और परिवेश में अपनी बढ़ती भूमिका के साथ समायोजन, साथ ही सामाजिक– पारिवारिक उम्मीदों का दबाव और अपनी क्षमता के साथ समायोजन। समायोजन में व्यक्ति की बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अनेक मनोवैज्ञानिकों जैसे **स्टर्न, बर्ट, क्रूज** आदि ने बुद्धि को समायोजन की योग्यता के रूप में परिभाषित किया है।

स्टर्न के अनुसार – "**नवीन आवश्यकताओं में अपने विचारों को चौतन्य पूर्वक समायोजित करने की योग्यता ही बुद्धि है।**"

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

हालांकि अब बुद्धि को अनेक मानसिक योग्यताओं का एकीकृत समुच्चय माना जाता है।

क्या बुद्धि सचमुच माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन में मददगार है?—यह जानने के लिए एक लघु शोध किया गया,जिसके परिणाम अग्रांकित है।

समस्या कथन— माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धि और उनके समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

शोध शीर्षक के अंतर्गत आए हुए पदों की संक्रियात्मक परिभाषाएं –

1. बुद्धि—बुद्धि विभिन्न मानसिक योग्यताओं का एकीकृत समुच्चय है जो सोचने ,समझने और सीखने के साथ व्यक्ति के समायोजन में मदद करती है।

" Intelligence is the aggregate or global capacity of the individual to act purposefully, to think rationally and to deal effectively with his environment." - **Wechsler D., 'Measurement of Adult Intelligence',1939**

2. समायोजन – समायोजन से तात्पर्य स्वयं को और अपनी परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने या उसमें ढल जाने से है । **गेट्स तथा अन्य** के शब्दों में – "समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने तथा अपने वातावरण के बीच संतुलित संबंध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।"

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य –

(1) माध्यमिक स्तर के निम्न बुद्धि-लब्धि वाले शिक्षार्थियों का उनकी बुद्धि-लब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

(2) माध्यमिक स्तर के उच्च बुद्धि-लब्धि वाले विद्यार्थियों का उनकी बुद्धि-लब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएं –

(1) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की निम्न बुद्धि-लब्धि एवं उनके समायोजन के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(2)माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उच्च बुद्धि-लब्धि एवं उनके समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तुत शोध की रूपरेखा –

शोध उपागम – प्रस्तुत शोध में मात्रात्मक उपागम का प्रयोग किया गया है।
शोध का प्रकार – वर्णनात्मक
शोध विधि – प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
समष्टि – प्रस्तुत शोध की समष्टि में उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जनपद के अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।
न्यादर्श – प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग करते हुए माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया। 100 प्रतिदर्श विद्यार्थियों में से बुद्धि परीक्षण पर प्राप्त अंकों के

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

आधार पर निम्न बुद्धि-लब्धि वाले 27 विद्यार्थियों एवं उच्च बुद्धि-लब्धि वाले 27 विद्यार्थियों के पृथक – पृथक समूह का निर्माण किया गया।

शोध उपकरण –

बुद्धि परीक्षण के लिए उपकरण – विद्यार्थियों की बुद्धि-लब्धि ज्ञात करने के लिए एम. सी. जोशी का 'सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण' प्रयोग किया गया।

समायोजन के अध्ययन के लिए उपकरण – विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करने के लिए एस.पी. कुमार की समायोजन सूची का किया गया।

विश्लेषण विधि – प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया ।

1 – मध्यमान

2 – प्रमाणिक विचलन

3 – टी परीक्षण

शोध परिणामों की व्याख्या –

सारणी – 1

माध्यमिक स्तर के निम्न बुद्धि-लब्धि छात्रों के समायोजन की सार्थकता के प्राप्त मान (N= 27)

चर	मध्यमान	मानक विचलन	टी प्राप्तांक	सार्थकता
निम्न बुद्धि लब्धि	22.02	07.59	1.71	सार्थक नही है
समायोजन	19.15	04.01		

उपर्युक्त साड़ी से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के निम्न बुद्धि-लब्धि वाले विद्यार्थियों के समायोजन के अध्ययन पर प्राप्त टी–प्राप्तांक 1.71 है। df 27 –2 =25 को लेकर सार्थकता स्तर का परीक्षण करने पर सारणी को देखें तो यह मान .05 या .01 किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात निम्न बुद्धि-लब्धि तथा समायोजन के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सारणी – 2

माध्यमिक स्तर के उच्च बुद्धि-लब्धि वाले विद्यार्थियों के समायोजन की सार्थकता के प्राप्त मान (N –27)

चर	मध्यमान	मानक विचलन	टी प्राप्तांक	सार्थकता
उच्च बुद्धि लब्धि	28.69	06.04	04.50	सार्थक है
समायोजन	22.63	03.54		

उपर्युक्त साड़ी से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के उच्च बुद्धि-लब्धि वाले विद्यार्थियों के समायोजन के अध्ययन पर प्राप्त टी–प्राप्तांक 4.50 है। Df 27–2 =25 लेकर सार्थकता स्तर का परीक्षण करने हेतु एच.के.कपिल (1984) की सारणी C का अवलोकन करें तो प्राप्त मान टी .01 स्तर पर सार्थक

है। अर्थात उच्च बुद्धि-लब्धि तथा समायोजन के बीच सार्थक और सकारात्मक और सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष– आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि जिन विद्यार्थियों में उच्च बुद्धि-लब्धि थी,उनका समायोजन स्तर उत्तम था।जबकि निम्न बुद्धि-लब्धि वाले विद्यार्थियों में बुद्धि का समायोजन से संबंध प्राप्त नहीं हुआ। अर्थात उच्च बुद्धि-लब्धि विद्यार्थियों के समायोजन में मददगार होती है जबकि निम्न बुद्धि-लब्धि का समायोजन से सार्थक संबंध नहीं मिलता है।

प्रस्तुत शोध का शैक्षिक महत्व – एन.सी.आर.बी. की एक रिपोर्ट (2016) के अनुसार भारत में प्रत्येक 55 मिनट में एक विद्यार्थी आत्महत्या कर लेता है। इसमें प्रायः वे विद्यार्थी होते हैं जो अपने पाठ्यक्रम, पारिवारिक परिस्थितियों ,अपनी आकांक्षाओं, रुचियों और क्षमताओं के साथ समायोजन स्थापित नहीं कर पाते। प्रायः उच्च बुद्धि-लब्धि वाले विद्यार्थी अधिक संवेदनशील होते हैं। शिक्षकों और अभिवावको का प्रयास हो कि वे विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर को समझकर उन्हें समायोजित करने में मदद करें। इस शोध के निष्कर्ष शिक्षार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों मनोवैज्ञानिकों एवम शिक्षाविदों के लिए लाभप्रद सिद्ध होंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

(1) गुप्ता एस.पी (2012), अनुसंधान संदर्शिका, इलाहाबाद ,शारदा पुस्तक भवन
(2) मुछाल,महेश कुमार एवं सुभाष कुमार (2008)– उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनके समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में अध्ययन
(3) सिंह,रामबाबू (2012), स्नातक स्तर के कला विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की जीविका वरीयता समायोजन एवं नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन ,पी.एच.डी. महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली।
(4) कपिल, एच.के.(1984) , अनुसंधान विधियां, हरिप्रसाद भार्गव शैक्षिक प्रकाशन, 4/230 , कचहरी घाट, आगरा।
(5) गुप्ता, एस.पी. (2017), 'उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।
(6) सिंह, अरुण कुमार (2015), 'शिक्षा मनोविज्ञान', भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स), पटना।
(7) गुप्ता, एस. पी.,(2003), 'आधुनिक मापन और मूल्यांकन',शारदा पुस्तक भवन,इलाहाबाद।
(8) गैरेट हेनरी ई. (1989) 'शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग', कल्याणी पब्लिशर्स,नई दिल्ली।
(9) भार्गव महेश– 'आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन'।
(10) Baron, Robert A. (2001) , 'Psychology' (5th Edition) New Delhi; Prentice Hall of India Pvt.Ltd.
(11) Best, John W. (2006), 'Research in Education' 9th Edition Pearson; Prentice Hall.
(12) Mangal, S.K. (1993) 'Advanced Educational Psychology', 'Prentice Hall of India' New Delhi.
(13) Skinner, C. E. (1977) 'Educational Psychology', Prentice Hall India Learning Private Limited.